

History

2nd Semester Paper - IV

त्रिशाक्तिपुस्तक :- ७४१ श्रीः शंभुदेवदेव शूलतले उद्यत तावतेषु
 एकं त्रिशैत आत्मैव वास्तवैतिका त्रैक्यं विमलं २५ प्रकं अर्थावच्छेद
 मन्त आत्मैव वास्तवैतिका त्रैक्यात् शरीर वास्तव उद्घातनि -
 बादे। त्रैक्यं त्रैक्यशक्तिव द्वैक्ये ज्ञानात् प्रविशति वास्तव, वा० ल०
 विशुद्धं पालं वास्तव ^{ननु त्रैक्यशक्तिव त्रैक्ये} त्रैक्यशक्तिव अर्थस्य पालं,
 त्रैक्यं प्रकं त्रैक्यैव वास्तव अर्थावच्छेद त्रैक्यं अर्थावच्छेद
 अर्थावच्छेद त्रैक्यं अर्थावच्छेद अर्थावच्छेद अर्थावच्छेद अर्थावच्छेद
 त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं
 त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं त्रैक्यं

- (*) वैश्वदेव -
- (*) प्रथमपर्व -
- (*) द्वितीयपर्व -
- (*) तृतीयपर्व -
- (*) कृष्ण आश्वीदखन -
- (*) यमशासन -

अनुपमसि - अद्भुत शक्ति - "अर्थावच्छेद अनुपमसि"
 जीवनसुखप्राप्तिसि - "देवता शक्ति"